ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

नर पशुओं का बधियाकरण

डॉ. अजय कुमार, डॉ. ममता, डॉ. रजनीश सिरोही, डॉ. दीप नारायण सिंह, एवं डॉ. यजुवेन्द्र सिंह

पशुधन उत्पादन प्रबन्धन विभाग, पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय मथुरा

नर पशुओं में अण्डग्रन्थियों को निष्क्रिय करने अथवा अण्डकोष निकालने को बधियाकरण कहते है। उन्नत पशु प्रजनन कार्यक्रम की सफलता के लिए अवांक्षित नर पशुओं का बधियाकरण वहुत ही आवश्यक कार्य है जिसके बिना डेयरी पशुओं की नस्ल में सुधार करना संभव नहीं है।

बधियाकरण के उद्देश्य

(1) अवांछनीय सांडों को बधियाकरण के द्वारा अव्यवस्थित प्रजनन से रोका जा सकता है।

(2) बधिया किये गये नर पशुओं का मांस अच्छी गुणवत्ता का होता है।

(3) अण्डकोष की सूजन, ट्यूमर एवं घाव आदि बीमारियों से नर पशु को बचाया जा सकता है।

(4) इस प्रक्रिया में पशु शान्त एवं नरम स्वभाव के बन जाते है और बच्चे, महिलायें नर पशु का रख-रखाव एवं प्रबन्धन आसानी से कर लेते है।

(5) बधिया किये गये नर पशु कृषि कार्य, भार वाहन आदि में आसानी से प्रयोग किये जा सकते है।

बधियाकरण की आयुः-

नर पशु को आपरेशन विधि द्वारा किसी भी आयु में किया जा सकता है। किन्तु बर्डिजो कैस्ट्रेटर के द्वारा 3 से 4 महीने के अन्दर कर देना चाहिए क्योंकि इसके बाद अण्ड ग्रन्थियां मोटी एवं सख्त हो जाती है।

बधियाकरण करने की विधि

नर बछडे का बधियाकरण प्रायः तीन विधियों से किया जाता है जो निम्नलिखित है-

1. ऑपरेशन (शल्य) विधि
2. रबर वैण्ड विधि
3. रक्त विहीन विधि

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

ऑपरेशन (शल्य) विधि द्वारा बधियाकरण

इस विधि में अण्डकोषों को निकाल कर बाहर कर दिया जाता है। खुले हुए घाव पर संक्रमण रोधी द्रव्य का छिडकाव करते रहना चाहिए जब तक की घाव भर न जाय। ऑपरेशन विधि का प्रयोग वर्षा ऋतु में नही करते है क्योंकि वर्षा ऋतु के महीने में कीटाणु एवं मक्खियों का प्रकोप अधिक होता है। कीटाणु और मक्खियॉं खुले पर अण्डे दे देते है जिसकी वजह से संक्रमण फैलने तथा घाव भरने में देरी हो सकती है। ऑपरेशन विधि प्रायः घोडों, गधों, कुतिया एवं सूकरों में अपनायी जाती है।

रबर बैन्ड विधि द्वारा बधियाकरण

बछडे को बांधकर नरम विछावन पर गिरा दें और एक तरफ लिटा दें। एक सख्त रबर रिंग को इलास्ट्रेटर की मदद से फैला देते है। इलास्ट्रेटर की सहायता से रबर रिंग को अण्डकोष के ऊपर स्थिर कर देते है। रबर रिंग के लगातार दबाव के कारण अण्डकोषो में रक्त संचार बन्द हो जायेगा और पर्याप्त मात्रा में पोषण तत्व अण्डकोष को नही मिलेगा जिसकी वजह से ऊतक एवं कोशिकाएं मर जायेगी।

इलास्ट्रेटर

रबर बैन्ड

रक्त विहीन विधि द्वारा बधियाकरण

इस विधि में अण्डकोष को पकडकर अण्डकोष की थैली को थोडा खींच कर बडा लें। अण्डकोष की नाडियॉं (स्परमेंटिक डक्ट) जो अण्डकोष से पेट की तरफ चलती है , को महसूस करें, पकडकर रखें, फिसलने न दें। दवानें वाली जगह पर टिंचर आयोडिन लगा दें। बर्डिजोकैस्ट्रेटर के जबडे पर टिंचर आयोडिन लगाकर अण्डकोष की नाडियों को दबा दें। तत्पश्चात यह प्रक्रिया ठीक जहॉं पर नाडियों को दबाया गया था उसके 1 से.मी. नीचे पुनः दोहरायें। यह इसलिए करते है कि पहली वार दबाने से बछडा डर जाता है और सन्तोषजनक बधियाकरण नही हो पाता। दूसरे अण्डकोष की स्परमेटिक डक्ट को बधियाकरण भी उपरोक्त विधि द्वारा करे। दोनो अण्डकोषों के ऊपर दबायी गयी जगह पर टिंचर

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

आयोडिन लगा दे ताकि कोई संक्रमण न होने पाये। संक्रमण न होने के लिए नर पशु की देख-भाल आवश्यक है।

बर्डिजोकैस्ट्रेटर

नर पशु नशबन्दी (वैसेक्टोमाइजेशन):

यह बधियाकरण से भिन्न होती है इस विधि में वासडिफ्रेन्स को काट कर बांध देते है। जिस पशुओं में यह विधि अपनायी जाती है कामेच्छा बनी रहने की वजह से गाय जो गर्म होती है , सामान्य रूप से क्रास करता है परन्तु उसके वीर्य में शुक्राणु न होने की वजह से गाभिन नही कर पाता है। ऐसे उत्तेजक नर को टीजर कहते है। ऐसे उत्तेजक नरों को गायों का मदकाल जानने के लिए गायों के झुण्ड में छोडा जाता है। यह उत्तेजक नर उन गायों के मदकाल को भी पहचान लेते है जो शर्मीली होती है और उनके इस मदकाल को शान्त ऋतु कहते है।

अंततः सफल पशुधन प्रबंधन के लिए बधियाकरण एक आवश्यक क्रिया है। इसके अतिरिक्त यह हर पशुपालक का उत्तरदायित्व भी है कि वह अवांछित नर पशु का बधियाकरण अवश्य कराये इस प्रकार वे आवारा पशुओं की समस्या को भी सीमित करने में योगदान कर सकेंगे।